Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

कबीर के राम व तुलसी के राम: एक अध्ययन

डॉ. डी.पी. चंद्रवंशी*

* सहा. प्राध्यापक (हिन्दी) शासकीय जे.एम.पी. महाविद्यालय, तखतपुर, जिला बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – राम एक व्यापक शब्द है जिसकी व्याख्या संतजन अपनी-अपनी दृष्टि से कहते आ रहे हैं, किन्तु उसका सार एक ही है केवल परमपिता परमेश्वर जो जीव रूपी माया को सन्मार्ग प्रदान कर मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है। विभिन्न जाति, वर्ग, धर्म, समाज चाहे परमपिता को भिन्न-भिन्न नामों से वाच्य करे पर वस्तुत: निष्कर्ष एक ही है वह है- राम। कबीर व तुलसी ने अपनी रचनाओं में राम के सार्थकता को गहनता से संस्पर्श किया है इसी कारण भक्ति काल में राम नाम का जाप अप्रतिम है।

कबीर के राम- निगुर्ण राम – कबीर के राम निर्गुण निराकार पारब्रह्म परमेश्वर थे। वे जिस माध्यम से अपने अनुभूत सत्य को प्रकट करना चाहते है वह उन्हें परम्परा, समाज, धर्म-चेतना के वाहक योगियों, सूफियों, पंडितों, वैष्णवों, मुल्ला-मौलवियों से प्राप्त हुई थी। उन्होंने परम तत्व के लिए राम, हरि, गोविंद, निरंजन, केशव, विष्णु, नाथ, गोपाल, सहज, शून्य, मुरारि, करीम, रहीम, अल्लाह, आदि शब्दों को प्रयोग किया है।

कबीर के राम- सर्वव्यापी विराट स्वरूप – परमार्थ सिद्धि हेतु कबीर के राम थे। कबीर के राम परम चैतन्य है, निर्गुण है। अचार्य शुक्ल ने शंकर वेदांत के निर्गुण ब्रह्म को ही कबीर का निर्गुण राम समझा है, किन्तु कबीर के राम केवल शंकर वेदांत के निर्गुण ब्रह्म के समान नहीं है। निर्गुण ब्रह्म विश्व का चैतन्य अधिष्ठान है। वह सर्वथा निष्क्रिय है। समष्टि अज्ञान अथवा माया से उपहित होकर सगुण ब्रह्म कहलाता है। कबीर के राम सर्वव्यापी विराट चेतना के प्रतीक हैं।

कबीर के राम घट-घट में व्याप्त हैं- कबीर के राम विश्व व्यापी हैं तो विश्व अतीत भी हैं। वह अवर्ण हैं किंतु सभी वर्ण उसी के है। वह अरूप है किंतु सभी रूप उसी के हैं। वह देश काल से परे राम है। जिसका न तो आदि है और न ही अंत है, कुछ अंश में वेदांत के निर्गुण ब्रह्म से मिलता है।

'संतो धोखा काजूँ कहिए।
गुन में निरगुन, निरगुन में गुन घाटि छाँड़ि क्यूँ रहिए।
अजर अमर कहँ सब कोई अलख न कथणां जाई।
नाति-स्वरूप-वरण-नहिं जाके घटि-घटि रहौ समाई।'

तो क्या कबीर के राम वेदांत ईश्वर के समान है? यह भी नहीं कहा जा सकता। वेदान्त का ईश्वर समष्टि ज्ञान से उपहित है और वह तत्व गुण प्रधान है।

कबीर का अरूप राम प्रत्येक रूप में प्रत्येक आकार में, प्रत्येक शरीर में रम रहा है। वह सबके भीतर सहज रूप में प्रतिष्ठित है। वह भावात्मक निर्मुक्त है किंतु प्रेम द्धारा सहज ही उससे मिलन हो सकता है-

'कहाँ न उपजै उपजां नाहिं, जाणै भाव अभाव बिहूना।
उदै-अस्त जहाँ मति-बुझि नाहीं सहजि राम त्यौ लीना।।'

कबीर के राम असीम है- कबीर ने केशव, हरि, गोविंद, राम इत्यादि प्रचलित शब्दों का व्यापक ईश्वर के अर्थ में प्रयुक्त किया है। पौराणिक अवतार नहीं माना है। उन्होंने कहा है-

'दशरथ सुत तिहूँ लोक बखाना।
राम नाम का मरन है आना।।'

उनके राम दशरथ सुन न होकर विश्वव्यापी राम है। वह ससीम नहीं असीम है।

'तेहि साहब के लागहु साधा दुई दुख मोहि के रहहु अनाथा
दशरथ कुल अवतरि नाहिं आया नाहि लंका के राव सताया।'

नहिं देवकी के गर्भ ही आया, नहीं जसोदै गर्भ खेलाया।
पृथिमी खन दवन नाहिं करिया, पैठि पताला नाहि बालि छलिया।।

कबीर के अनुसार आत्मा और राम एक है-

'आतम राम अवर नहीं दूजा'

कबीर ने परमतत्व को निर्गुण राम कहा है वह अज्ञेय है। उसकी गति लक्षित नहीं है। उसका मर्म कोई नहीं जान सकता है।

'निरगुण राम निरगुन राम जपहु रे भाई।
अविगति की गति लखि न जाई।।
चारि वेद जाके सुमृत पुराना नौ त्याकरणां मरण न जाना।'

उनका निरंजन माया रहित है। वह न जन्म लेता है न मरता है। न रूपरेखा है न वर्ण है। वह निर्भय निराकार अलख निरंजन है।

'अलख निरंजन लखै न कोई, निरभै निराकार है सोई।
कारन अबटन कथ्यौ नहिं जाई।
सकल अतीत घट रहौ समाई।'

कबीर के राम अगम अगोचर- कबीर ब्रह्म ज्ञान रूवरूप राम की उपासना करते हैं। उन्हें खोजने की जरूरत नहीं है। वह अगम है अगोचर है वह अनुभूति है।

'तो साहिब के लागौ साथा, दुख सुख मेटिजौ रहयौ-अनाथा।
न दशरथ घरि औतरि आवा।
न लंका का राव सतावा।।'

तुलसीदास जी के राम- राम के अनन्य भक्त तुलसीदास सगुणोपासक थे। उनके राम दशरथ पुत्र अयोध्यावासी श्रीराम है। तुलसी के राम मूलत:, निर्गुण

ब्रह्म है जो सगुण रूप में प्रकट हुए हैं। तुलसी के राम शील, शक्ति और सौंदर्य रूपी है। धर्म रक्षार्थ वे संसार में सगुण स्वरूप में आए हैं। तुलसी दास जी कहते हैं–

'जब जब होई धरम कै हानि।
बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।
तब–तब प्रभु धरि विविध सरीरा।
हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा।।'

तुलसी के राम लोक उपासना को महत्व देते हैं– तुलसी के राम लोकनायक है। शील, सौम्यता के भंडार हैं। भगवान राम के चरण वंदन करते तुलसी दास कहते हैं–

'जाऊँ कहाँ तजि चरण तुम्हारे।
निदरिगनी आदर गरीब पर करत कृपा अधिकारी।
कौन देव राई बिरदहित हठि–हठि दीन उधारे।'

तुलसी के राम सुंदर, सुशील व मनमोहक है। वे भक्त–वत्सल है। भक्त प्रार्थना को सुनने वाले हैं। सुंदरता में कामदेव भी लज्जित हो जाते है। वे मर्यादा पुरूषोत्ताम है। तुलसीदास जी भगवान राम के बचपन का वर्णन इस प्रकार करते हैं–

'खेलत बसन्त राजाधिराज।
देखत नभ रौतुक सुर समाज।।
सोहै सखा अनुज रघुनाथ साथ।
झेलिन्ह अबीर पिचकारी हाथ।।
नर–नारि परस्पर गारिदेत।
सुनि है सहि राम भाईन समेत।।'

निष्कर्ष– कहा जा सकता है कि कबीर निर्गुण राम के उपासक है तो लोक कल्याण एवं धर्मरक्षा संस्थापक राम के उपासक तुलसी दास। तुलसी के राम दशरथ पुत्र है तो कबीर के राम अजन्मा, अनंत व निराकार हैं। जन्म–मृत्यु के बंधन से मुक्त परे हैं। जबकि तुलसी के राम जन्म–मृत्यु के बंधन में बंधे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. शुक्ल आचार्य रामचंद्र हिन्दी साहित्य का इतिहास नागरी प्रचारिणी सभी काशी 1929
2. दास बाबू श्याम सुंदर कबीर ग्रंथावली 1928
3. द्विवेदी हजारी प्रसाद कबीर 1942
4. दास तुलसी– रामचरितमानस– गीताप्रेस गोरखपुर।
5. दास तुलसी– विनय पत्रिका।
6. दास तुलसी– कवितावली।
7. सिंह जयदेव– कबीर वाणी।

****